

२०.८.२२

मराठी

वेदांत

पार्सी

२८ फूल

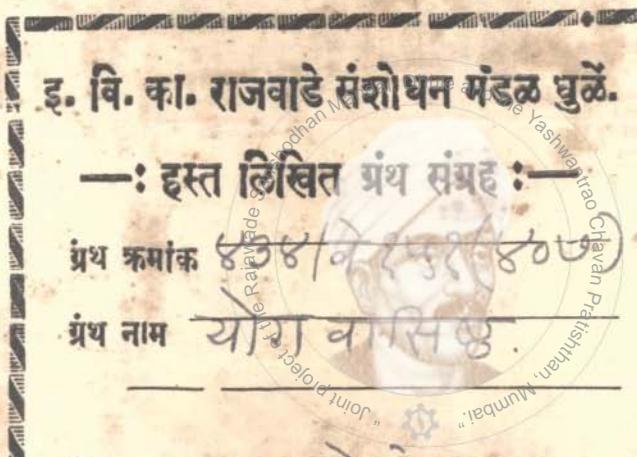
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४/के ८८८/४०८

ग्रंथ नाम योग वासिष्ठ.

विषय म. वेदोत.



(1)

॥निर्वाण्यकर्णदवपुजापारव्यानसर्गा॥१॥ वासीं

पत्तमो सहुरगमचंद्रा॥ शांतानंदशीवदंकरा॥ दीनदया
 करुणाकरा॥ विश्वेद्वारविश्वनाथा॥ १॥ कायाकाशीआधी
 दवान॥ जेकाप्रद्यक्षजानदवन॥ पंचकोशमहास्मवान॥ कीडा
 स्थानशंकुचें॥ २॥ उत्तमवाहिनिश्चिह्नंगा॥ दर्शणेपातकेनेतन्नगा॥
 शुर्घेमज्जनेतुद्वरीघगा॥ जेकांशीपश्चगसुखकारी॥ ३॥ मा
 नसरोवरनिवास॥ शांतनंदपरमहुंसा॥ कर्तनतारकउपद
 द्वा॥ द्वेदीनवपाशानकाचें॥ ४॥ पुष्पपावनभगाधक्षेत्र॥ स्व
 येद्वैनांगेरीहुर॥ समष्टयजक्षरसार॥ करित्तद्वारविश्वाचा
 ॥ ५॥ जगहुरजगन्नाथा॥ विश्वंनराउमाकांता॥ पुरविमाशी
 येमनोरथा॥ वासीष्टुंश्वात्तद्वारी॥ द्वा॥ दाताउद्वारशीवज्ञकरा॥
 देतानहुणेलाहालशोर॥ उपमन्यासक्षीरसागर॥ अपिली
 समयदुधजाता॥ ७॥ माझीकांश्वाकीदुमात्र॥ देणेतुसेजप

(2)

रां परा ॥२॥ चुक्ते पेचा सागरा ॥ तुष्टला साचार हरि दा सा ॥३॥
 पुर्विज्ञाए जय योग ज्ञान ॥ चित्तविश्रांति संपादन् ॥ तद्वारा
 त्रृष्णं डोपा रख्या न ॥ पद निवण्ण प्रगट केले ॥ धा का सीष्ट मृष्ट छंडि
 संवाद ॥ योग ज्ञान विषय बोध ॥ ज्ञेयोपाविज्ञे स्वाराम पद ॥
 अश्वज्ञाग धते थीचा ॥४॥ आतो तेष्ठं च कारेंद्रे व पुजन ॥ चि
 त्तविश्वाति पावोन ॥ जोरी ज्ञेगा पहनि वण्ण ॥ तेचिनि रोपणाता
 मि ज्ञेत ॥५॥ तेष्ठं जारं जीमोक्षा पादा कारण ॥ प्रतिवद्वक्ता ॥६॥
 देहानी मान ॥ याचे निवृत्तीकारण ॥ ही तो पदे राकरण किं
 चिद्वात्र ॥७॥ वसीष्ट्या अनासमावृमेवेदं मिथ्य संप्रतीनाम
 रे ॥ अयं नामाहु मिथुंतर सदे वज्रीरकं ॥८॥ मां सास्ति मूर्यनि
 पणि ॥ देहोहु मिति विश्रमं ॥ यज्ञसंकल्प निमणि ॥ होहे संति
 महस्त्रशः ॥९॥ सुख तत्परता येन स्वप्रक्षमदे हेन दिक्षुटन् ॥

वासीष्ठ

॥निवणिष्ठकरणदेवपुजोपारव्यानसगा॥२॥

परीक्ष्ममसीहेरम्॥सदेहुत्तेष्टसंस्थितः॥टिका॥टेकरस्तु
जसमथगीसांगेनयाधरवेजथगी।अंतरीधरनविवेकत॥
रवस्वाथयिवावें॥१३॥हेकारीरवास्तव्यविचारीतां॥जना
मावजसेत्वत्ता॥तरिसंप्रतविचारीतां॥दहुहंताद्धुजाते
॥४॥स्वरुपाचेजेविभाष्टरे॥तेचिदेलस्तुद्विचेकारण॥अ
डिकाराचेकेसराणा॥तेएजजानप्रसरपावै॥१५॥जोटहात
दहुमिह्नयोन॥आसयन्त्वेनेदेभन्निमान॥अध्यासणेचर
होउन॥अंतरीजजाणविस्तारी॥१६॥यालगीजरिविचारक
रिदेत॥तरिहुदेहुजसहपकल्पीत॥पंचधातुचेजनाश्रुत
ल्यपावतक्षणमध्ये॥१७॥मांसभस्थिमजाग्रहन॥नाउ
चमविरिवेष्टन॥मक्षुत्राचेजाजन॥अमंगक्षुतनकुश्चित
मा॥१८॥

(3)

सत्तधातुचनिर्मणा॥ ज्यदेहात्मं संकल्पीत दिसेनाना॥ ऐ
से सह स्वधादेहजसे त ज्ञाणा॥ देहजापुल कोणमाना वा
॥१८॥ ये सादे हु मीर चुपती॥ निः रोषटाकावि है श्रांती॥ तुत्वि
हामा स्वयं ज्योती॥ देहस्मृती न धरावि॥ २०॥ सुखरूप पर्यं
वीर्वर्तमान॥ स्वयें लभते न इपन्ना॥ डोसता स्वप्न देहेकरु
ना कर जो चमणा दीर्घटी॥ २१॥ ब्रीर मंत्रे स्वप्रशरीर॥ संगयं
वेठे उसे साचार॥ तद्वत् शुक्र वह सा समाच्र॥ मिथ्यावहा॥ २२॥
पैयत्वा॥ २३॥ ये सीदे हारी प्रवृत्ती॥ मीथ्या मय केवलं श्रां
ती॥ संदेह काय सार चुपती॥ संशय येव धीनि धरावा॥ २४॥
जोक॥ जागरायां मनोराज्या॥ येन स्वप्न पुरातर भपरी चम
मनुवा॥ संदेह हस्ते क्रमं स्थीतः॥ २५॥ दीर्घस्वप्न मि संविद्धि
दीर्घवा वित्त विश्रम॥ दीर्घवा परी मनोराज्यं संसार चुनं द
नाथ॥

वासीष्ट

॥निर्वणप्रकरणादेवपुजापारव्यानसगी॥१॥

मानासमात्रमेवेदं॥नसंन्नासद्भगव्यं॥इत्यनेकलनायागा॥१५८॥
२। लोकनंविदुः॥हाठीका॥जागैतीस्वप्नशरीर॥अप्रयोजकमानी
जेसाचार॥तैसे विस्वस्त्रीजागृतशरीर॥नद्यडेवेहारकांहीचतो
॥२६॥सुमुक्तीचेनाईएहोतां॥हात्तीजप्रयोजकतत्त्वता॥यैसी
याज्ञशरीराचीजहुंता॥वाकुनसर्थासुरकीक्षावें॥२७॥जागृतीत्तेजे
मनोरथकरण॥चीत्तप्रवाहीजसतोदेहविस्तरण॥तेषोजेंकांही
परवज्ञहोण॥तेंमनोराज्यबोलणरव्युक्ताया॥२८॥यामनोराज्या
ता॥स्वूक्लदेहमीध्यापुत्रा॥नसतोदेहोतरगमनकरीता॥कल्प
नागृस्तहोउनी॥२९॥त्यागृतीजवस्थेमनोराज्यांता॥ज्यादेहेपुरास्त्वंग
तरासंचारकरीत॥जघवामेजपर्वतीफीरत॥तोदेहरव्युक्ताथको
ढेआहे॥३०॥जग्येरव्युनंदन॥हासंसारतोहीचस्वप्नज्ञाण॥जघ
वासविस्तरचीत्तविश्वस॥वक्तुखन॥चीरकाळृशमदारणमानका॥३१॥

(३०)

(4)

कीं वाय प्रपं चाकारणे॥ मनो राज्ञा ओ सेजाएने॥ मीथ्या मूरत ह
 व्य प्रान्॥ काळृ इ प्रमाणो हैं हैं॥ १३०॥ प्रासु मात्र लग हैं अ सेवी स
 त॥ यालागी नो है बही संत॥ क्राधी जो तहुणो न अ संत॥ नो है नि
 श्वी तर घो तम॥ १३१॥ याहे त है लग भा समान॥ अ नी वचनिय
 तु जाए॥ ने दकल्पना द्यागो न॥ सम्यक अवलोकने करावे॥ १३२॥
 या प्रकारे प्र पंचाते॥ सद्युज्ज व जाए ति अ ज्ञात्वा॥ जाग्र हृष्ट को नि॥ १३३॥
 निवात॥ स्वस्त्र पी स्वस्त्र रही लेती॥ १३४॥ छोका जु वश्य मेव ही
 मया॥ कृत्व्य मिती नि स्त्रया॥ इया स मूरण प्राप्तै॥ बीमुधा
 प्रसीत प्यते॥ १३५॥ जु वश्य मेव जातेन॥ कीं चील्सु लीव ने वाद
 कं॥ प्राप्तव्य पुरुष येती॥ लग से वर्ष स्यको मंदश॥ नाय विजा
 णं परिय ब्या॥ पदार्थ पटलं वृ जो॥ आसा समात्र सामान्या॥ मी
 हमालोक यान वान॥ धाटी का॥ म ल ल अ वश्य आहे मरण॥

वासीष्ठ

॥ निर्वणप्रकरणद्विवपुजोपारव्यानसगी ॥१॥

जेसानि श्वयके लगा आपणा। आमहिता विचार साहुणी तेषो ॥
अत्रेका पन कांकरावे ॥ इशाये ईंउपलत्यापाया सी। अविसर
आपदायते जनाया सी ॥ उथला सजा ल्यात यांसी ॥ मद मोह
मानसी कांधरणो ॥ १५ ॥ उथवा आपदा जा ल्याप्राप्त ॥ रवेद का
करावा चितात ॥ नेणुनमुढजवि झागृस्त ॥ अमेमानीत सुरव
हुङ्खवा ॥ १६ ॥ हेप्रपंचकृपप्रकाशसिंधात ॥ आसासमाचरजगा
स्थत ॥ यालगीटा कावे समर्त ॥ सर्वथा हेतन धरीयाचा ॥ १७ ॥
केवलु जेंकांस्वकृपग्रास्थत ॥ सर्वचित्तसेभान रयुत ॥ सद्दी
न्माचसदोदीत ॥ ते जो मडीत प्रसाज्यकी ॥ १८ ॥ उगमये अन्तच
रच्छु नंदन ॥ याच्चेतुकरीगजनु संधान ॥ सर्वदातनी पृष्ठोऽनु
न ॥ स्वानंदच्छुन विशजे ॥ १९ ॥ म्लोका ॥ आसासमाचरमवीक्ष ॥
चीता मध्यकलकीत ॥ तत स्तदयोसंयुत्या ॥ निरासासो मवतन ॥ २० ॥

(5)

रामद्वेषप्रेष्टै। न विली नोनमोक्तीले॥ यस्य कल्पतरोक्तमा
 की नमोगत्तम्यते॥ ११॥ येषु जामवं मापन्ना॥ विवहाः शास्त्र
 जात्तीनः॥ रामद्वेषमयोमान्याम् गद्यस्त्रिगत्तता न॥ १२॥
 ठीक॥ साकारणो अजासमात्र होस्ता॥ दीमते हैं लगसमन॥
 चीत्तमें द्वेषमुप्रावद्यरीता॥ यात्तामीनि इच्छिदया गावें॥ १३॥ या
 त्तामीनि विकिल्यनिमासा स॥ श्रीनामाद्वेषोइसावकाशा हिकु ॥ १४॥
 मुजे कारागद्वेष॥ नकशीस्यमतु गत्ता॥ १५॥ रामद्वेषलक्ष्यस
 पद्धान्ही॥ मनोवास्त्रोत्तमंतरीद डोनी॥ ते लेणो बाहेर वातले
 दवहुनि॥ मनपवित्रकान्न असे जा॥ १६॥ ताहृश्यपुरुष पद्ध
 त्रकान्॥ डोकांकल्यहृश्चासमान॥ तथायासुन साद्यक जाना॥
 यरामश्यकोणन पावे॥ १७॥ डोकोणीचतुःशास्त्र संपन्न
 वदीकलोकीकवे कृषीनि मुख्या जा॥ हीचप्राहवेत हागवी

वासीष्ट

॥निवणिप्रकरणदिवपूजापाख्यानस्तगी॥१॥

स वलेच्छुन् ॥ रा गद्वेष सु लीन औतर्गी ज्यावें ॥ ४३॥ ये मंदो कोंग
न्नित ॥ ते गधि जि जा एव पुजा अका ॥ अंग ल न्मत या वें वेद्या
घन करी तया गावें ॥ ४४॥ ये उन्निया न रदे हुआ सी ॥ जे ही आश्रय
देह ला रा गद्वेषा सी ॥ ते जाए वरापर रासी ॥ ब्रथा जन नियां सिप्र
स वली ॥ ४५॥ इका का ईदं सं सारचक ही ॥ ना जो सं कत्य मात्र का ॥
सं रो धी ता यां वहना ॥ ईदं चुन दन व्यता ॥ ४६॥ हो श्री ता यां मनोना
न्या ॥ मिदं सं सारचक कं ॥ प्रयत्ना दो धीत मणी ॥ प्रवहु द्येव के
तः ॥ ४७॥ परं पौज समाशी द्य ॥ बल प्रजा व्युक्ति की तः ॥ ना जी सं सारच
कं स्या ॥ चित्त मेव नीरो धर्यते ॥ ४८॥ टीका ॥ है सं सारचक जे रचुने
दन ॥ ना जी रप जे सं कत्या सक मन ॥ रो धी ता ही रात्री दीव सचला ॥
स वथा जाए न सं डिता ॥ ४९॥ प्रयत्न करी तां ही है स्थीरा ॥ कदा न ग
है सं सारचक ॥ वाहत आसे निरंतर ॥ जा ए सा चार दया निधे ॥ ५०॥

(5A)

(6)

मनोलक्षणा नीजोद्येषो॥ तो पावत असतं क्षो जाते॥ संसार
 चक्र वैरो भ से धावत॥ प्रथम रो धी लव्या निवां तरा हेना॥ ४७॥
 यासि उच्चाक दितं काह्या साधन॥ कदा हेना कहेर धुने दन॥
 ये कर संग अव लंखुन॥ महा स्वधर एजा वरे हेँ॥ ४८॥ उक्त
 पौर च आश्रित ना॥ क्षेत्रु युक्त प्रजाते एक जण॥ नाजी स्वानि जे
 को च पक्ष मन॥ ते परम यत करन निरोधावे॥ ४९॥ मग हे संसा
 ॥ ५०॥ रचका चैरे चल पण॥ दों का प्रवृत्ती सकारण॥ यात्री यो निश्चकु
 ते लगुन॥ करा वे निरोध चित्ताचुं॥ ५१॥ स्तो का प्रजासौ जन्य
 दुर्ते न॥ ज्ञा स्वं संकीर्ण ते नच॥ पौर धे इन य प्राप्त॥ न तहुच
 क्षम त्यते॥ ५२॥ मय प्रद मक्ष लव्या ण॥ छव्य सिवस्व हारी णा॥ मन
 गाव्य मुसु ज्य॥ यो सीमो सी स्त्री रो प्रवन॥ ५३॥ कौतय द्वका
 को तं नाशा स्वाणी न बोधवः॥ इक्षु वै तीपरि त्रातु॥ गुरु वो न च म
 नव॥ ५४॥

॥निवरणप्रकरणदेवपूजोपारव्यानसर्वा॥२॥ वासीह

तीका॥ प्रज्ञास्मुत्तीशि द्वा थी॥ गमदमा दिसंपदायुक्ता॥ जध्यास
न्नगास्त्रवीचार सहीत॥ फोरुघुबोलतयानंवा॥ ४॥ देसाये पुरुघु
स्मृतकरन॥ अन्यथा प्राप्त नोहु भेसाधन॥ तेसहृतीपाकीजेये
ण॥ यालागी सुयत्तकरावा॥ ५॥ नयदायकमुमंग कुरुषसर्व
था॥ जोधैयवितातेपाहता॥ यसामनोलक्षणपीशाचरव्युनाथा॥
तादुंजातांनिदक्षी॥ ६॥ पा दुरकरनमनपीशाचास॥ मगडेसाजा
हुतेसाचजेस॥ निजामुपदींसुखेविलस॥ परमपुरुघरामुचं
द्रा॥ ७॥ चीत्तलक्षणपीशाचरव्यतें॥ आक्रमीलें घ्यापुरुघातें॥ जा
खेंवं धुवर्गदीसमस्तें॥ सवटीगुरुतयातें रक्षनशके॥ ८॥ मने
लुक्षणपीशाचाजाधीन॥ जयाप्राणीयाचेवर्तन॥ तोतंवगीकी
लाजासुरीन॥ तयांसीउपावकोणोकरावा॥ ९॥ पदोवीत्ताजाधीनजो
पुरुघा॥ तोनुधरेगराचवेग॥ यालागीचीत्तकरावेवस्य॥ अनेक
उपायासजाश्रुतनि॥ १०॥

(७)

येचीजधीमुनीजापन॥ बोलेवसीहृकीन्माववन॥ श्रोतीहोउन
सावधान॥ धावेजवधानकधेसी॥ ३०॥ प्र्णोक॥ संजांत्तदित्तवेता
लभगुरजाखार्थबाधव॥ रशक्कवंतीस्तमुड्यतुं॥ स्वत्यपंकान्म
गंयथा॥ १७॥ थाचोगमोगोवहीः कायणीजायचानु सरेसदं॥ परीक्षा
यन्हाधस्वि॥ मेकमासान्नाशयेत॥ १८॥ ठीका॥ चीतलक्षणवेता
कुञ्जन॥ जयाचापावलाउपत्रामन तयसीसंसारकर्वमापसुन॥
काढाव्याकारणशक्तिहोती॥ ३॥ सहुरसजाखबाधव॥ हेसम
शहोतीस्वयमेव॥ जेकीशोहेचीखलाधासाव॥ मृगसावेवकावी
जे॥ ३॥ सविक्तरनोगद्युगाव॥ महानुभावेयायमेकावे॥ प
रमार्थस्वरूपविचाराव॥ आमुपवआश्रावेस्वतसिद्धां॥ ३॥ चीती
जाल्यागोगद्युग॥ तरिचूजाकुकुनिलामुयोम॥ यद्धीसंगेन
वचांग॥ तोटुसुनगधरीवीती॥ ४॥ पुर्विवर्तिणाजोष्टतात॥
मीसांगेनरद्युनाथ॥ श्रेवणोजोडेलापुलेहीता॥ पुणिपरमार्थहाता
चठो॥ ५॥

॥निवणिप्रकणदिवपुलोपारव्यानसगी॥

गाच॥ उत्रे मामपस्त हृषीं महा मोहु विनाशनि ॥ स्त्रिया कथीता पु
 णी।। मम कैला सकं दरे॥ १२५॥ सं सारकुशवशं दर्थी॥ देवे न छोड़ मौली
 न॥।। अस्तीदुं कर संप्राप्ता सुरः परमादीवः॥ १२६॥ कैला सो नो मरो
 लोडो॥ गोरे मणि दीर्घं तेवास्त्रेष्ववन्देवे॥ हस्त्राङ्क कलाधरः॥ १२७॥।।
 तपु जयन्महा देवा तस्मीन्नेवशीरोपुरा॥ कदाचीद दसंगंगा॥ तते
 वीरचीता श्रमः॥ १२८॥ तपार्था तायसा कारो॥ चीराय रचीता स्थीती॥ १२९॥।।
 ठीका॥ अग्ने भर चुच्चिरा नस्के म नी॥ देवदीर्घी मिहाते दुरिकी॥ आ
 सज्जानउपायेभन्यपरी॥ सोगेन निधनि तेयेका॥ १३०॥ पूर्वी किन्ता
 सवंहसी॥ स्वसुखेवेवत्रीपुरा नी॥ छोभधकथी त्वाहीतोपवारी॥।।
 तोतु अवधारी राजकुमरा॥ १३१॥ देवाधीदेवस्वप्रकारा॥ मौली उ
 द्विदकी शीटलयांसा॥ जेवानीष्टतीर्थो मकेशा॥ संसारज्ञांती स
 बोली त्वा॥ १३२॥ चंडकीष्टमिसुदाय सुगोतीत॥ उत्त्वष्ट कैला सवि
 रव्याते॥ स्वर्गसीनु वषा मंडीतो॥ जयेमंडीरीवसतगोरीपती॥ १३३॥।।

(8)

सापर्वतीचंद्रककृधर॥ देवाधीक्षेव मगवंत हर॥ पुरीमीहीपुज
 न तयर॥ होते ज्ञेय गते राई॥ ४७॥ येक समझंगतीरी॥ आश्र
 मर चुनत पारीचौ॥ मीहोतोते अवसरी॥ चीर काके वरी स्वस्थीती
 ने॥ ४८॥ स्त्रीका॥ सीढ़ संदात वलीतः॥ कृत तजा स्त्रीर्थ संगृहु॥ ५०॥
 अंस्युत पुटीकः पुस्तक व्यह संगृही॥ ५१॥ इवं गुणविशीष्टस्य॥ कै
 ला सवन कं जाको॥ तप्य प्रवरतोरमा॥ ममलो ल्यवत्तते॥ ५२॥ ज्ञ का
 येक संगतोचीहु॥ बहुल स्यामृ मेहीने॥ गते श्रावण यक्षस्य॥ ५३॥
 रात्र्ये क्षयमागते॥ ५४॥ वाटीका॥ सीढ़ समुदाय वेष्टन॥ शास्त्रान्
 संग्रह करन॥ पुष्या सटोपले संपादन॥ अज्ञान जाने वीवारक
 रीत॥ ५५॥ यास मक्त सीढ़ समुदाय सी॥ वीवारक रीती अहीणी
 री॥ तप्य रात्रि व जाग धने सी॥ रात्रि समुदाय सी अनुरक्ता॥ ५६॥
 प्रकारी गुणे सीयुक्ता॥ कैला सवन कं जात॥ गंगा तटी तप्य आवर
 आ गथीत तजामुसी॥ ५७॥ यसीयरीती रच्छु नाथ॥ कीते ककाल्य

॥७॥

वासीष्ठ

॥निवणिप्रकारादिव पूजोपाख्यानसर्ग॥१॥

तमस्तेष्य॥ शिष्यसहुवर्त्तमानयुक्ता तोभयुवर्वृत्तात्तवल्लला॥७५॥
गुनंतरे कोष्ठीयेकसमयास॥ श्रावणकमत्तीयामहमीदीवस॥ रात्रीपूर्व
पर्यामलोद्यास्॥ अपयुवविन्यासयोजला॥७६॥ स्त्रोका॥ दीक्षसंरगंते
सूपासु॥ काष्ठमौनस्थीतारवीला॥ यकड़ोछेड़ायकारमु॥ कुंजेषुगढ़ने
मुच्च॥७७॥ एतस्मीन्समयेतच्च॥ यामार्घेप्रथमेगते॥ समाधीतनुतोनिवा
स्थीतोहुंबाह्यमग्नद्वक्रा॥७८॥ उपदेयकाननेते जो॥ क्षटीसुवसमुष्टि
उम्बाप्रशातसंकारं॥ चंचलदीदुगणोपमं॥७९॥ हीका॥ तोम्यासमाधीवि
सहजन॥ बाह्यपदाथीहिष्ठीनिमग्न॥ करनराहीलोवीद्वान॥ जालेतेरद्युन् ते
दनपूरीसावें॥७५॥ यक्कैदुराजांतरपञ्जीसोन॥ अत्रेवकाष्ठमवल्लक
न॥ अधःकारनिरसावाजान्त्रकरन॥ रात्रीच्याद्वाइजाएरचूवयी॥ ऊ
हेसे आरएयनिवृज्जवनअसृता॥ याम्भवाअद्यस्त्रिगजाता॥ अवस्मा
तदीक्षतेजेशक्तकृता॥ यासमीपाहतापैजालो॥७६॥ तेजसाद्वजतीलुक्त
वणीमेवगतावदीसमाने॥ क्वेदसंद्यावीउपमाज्ञाकारणो॥ तोजायमानज्ञ
तीरम्य॥७७॥

(9)

सुसंद्रतेजाचाप्रकारा॥ अंतर्बहुचिदाभास॥ आनन्दमयसुखविला-
 स॥ तीव्राविन्यासनकोलवे॥ वर्णश्लोकाप्रगटीकृतदीकृजां॥ तदालोक्य
 मयासमयात्॥ अंतःप्रकाराचालीन्याम् बुद्धीहृष्ट्याविलोकीतं॥ ३६॥ ग्राव
 द्युम्यामीतं सानुं॥ प्रातश्वद्रकत्वाघरण॥ गौरीकरपीतीकरानंदीप्रोत्सरिता
 ग्रगः॥ ३६॥ सीष्यादुद्धोध्यत्वस्थान्॥ गुडीहृष्ट्यसुसंघतः॥ अगमसुम
 नास्तस्य॥ हृष्टीपूतं सहुंपुरं॥ ३७॥ ठीका॥ द्योतेजेदीकृंजप्रकारामाना॥
 द्यादीव्यतेजातेपाहन॥ अंतर्गते ग्रप्रकारामाशीयविन्॥ स्वानन्दवनमीजा॥ ३८॥
 लो॥ ३८॥ माशीबुद्धीजे प्रकारामान॥ इनतेजेसुप्रसन्न॥ उवलोकीते
 तिषेकरण॥ उपमादेष्टोकार्ययस्तीप्ता॥ लक्ष्यपाहीलेष्यायथानीगुती॥
 तोकक्षाच्याकडाप्रती॥ चंद्रकल्पूधरीदीव्यमृती॥ संगेपावतीआलाजसे
 ईगौरीव्याहसेहृष्ट्यसना॥ गणसमुदायसहवर्तमान॥ नंदीकेश
 वे त्राठीष्ट्यसना॥ दुर्गमादीनिवारणकर्तीताहे॥ ३९॥ मृगम्याहिष्यासस
 मद्धयासुना॥ उठठनयुषासुनपुजाव्यञ्जना॥ सर्वदिव्यस्वाधीनकारन॥

१८।

वार्षिक

॥ निर्वणप्रकरणदिवपुजोपासन्याना ॥ सर्ग ॥ १२ ॥

पुष्टकृसंपादुनसामग्री ॥ द्वादेवजवलोकीलहुरुना ॥ मगर्म
मुद्रमनाचाहोउना ॥ याचीये पवित्रदृष्टिकलना ॥ कराव्यावंदन
चालीला ॥ वर्णास्त्रोका ॥ तत्रपुष्पालुलीदता ॥ हुरादेवतीलोचना ॥
हत्ताछेनिमयादेव ॥ संप्रणाम्यानीवंदीतः ॥ अधाततः चिदप्रभा
सरख्या ॥ अज्ज्वारीतलयातया ॥ दहरयासवर्तीहिरीप्या ॥ चीरम
स्म्यासद्वीकृतः ॥ रह्यापुष्पासात्पविद्युय ॥ तस्मेत्तेलोक्यस
क्षीणे ॥ अव्यपुष्पांतथापाह्या ॥ मस्यपेत्यापीतिसया ॥ रुणाटीका ॥
इत्तनपुष्पालुलीसमपुनि ॥ क्रमभव्यपाह्यपुजनक्रन्तना ॥ सा
धागेसीजनीवंदुना ॥ देवतीलोचनसुखीकेला ॥ एटोत्तवेचद
कक्षेचीसखीसंवीती ॥ अवग्रसुरीतद्वाजानंदविती ॥ सक
क्षाचीजातीप्रियाद्वारीती ॥ तेत्तपाह्यीनेमजप्रतीजवलोकी
ला ॥ दृष्टिपुष्पयुक्तलोकेला सपर्वति ॥ याचाकडालासुज्ञोनीत ।

(१०)

तेऽन्येऽपविष्टुमाकांत। द्वे वस समर्थविश्वसाक्षी॥१०॥ त्वा सजर्व
 पाद्यपुष्पाजुली॥ जवकीयेतनी म्यापुलाकेली॥ नानाउपवा
 रसुरवसमेकी॥ चंद्रमोर्लीजाराधीलो॥ श्लोका॥ मंदारपुष्प
 जलया॥ कीकीणविहवः पुनग॥ नानावीधीन्मस्कार॥ स्तोत्रैश्वा
 स्यवीति: इनीवः॥ ११॥ ततोन्नगवतीगरी॥ तावृत्या वसपयथा॥
 संपुजीतसुखीयुक्ता॥ गणमठलीकांस्तथा॥ श्वथापुजांतेपुणिर्दि
 तांसु॥ रसमीसीतक्लघमीर॥ तत्र पविष्टुप्रोवाच॥ मासद्विक
 लाधरः॥ १२॥ हीको॥ पारीलातसु मनेवृठन॥ अनेकपुष्पाजुली
 समपुनि॥ अहोगपेचागनमन॥ तोत्रपठननानापरी॥ १३॥
 चसोसज्जावयुक्ता॥ इनीवपुजीलायथोवीता॥ स्वामीस्तवीलाभ
 माकांत॥ द्वे वस समर्थसिवविदे॥ १४॥ तदनेतरसरव्यासहवर्त
 माच॥ केलेंगोरीवितावशपुजन्नप्रते संकीपुजीलेससुदायगण॥
 निवसनानजाणोनी॥ १५॥

॥निवणिप्रकर्णदिवपुजापात्यानसर्ग॥२॥

युजे व्या अंती पुणि विद्व कीणि इमे सीसी त कृष्ण वाते एक जन। मी के
स लोह वानी मुख हो उन। याम ल प्रतीर्णि व जा पण बोल त जा
ला। थ्या। स्त्रो के। ब्रह्मन् प्रज्ञ म जा ली न्या। प्राप्त विश्वा त यः पर।।
क श्वी कल्याण कारी ष्या। स विद्व स्ते स्थीरा स्यद्वा। ४॥। क श्वी त प
स्त निविद्वि॥। कल्याण मनु पत त।। क श्वी मुष्टि मनु प्राप्य।। क श्वी
च्छा म्यती जी त यः। ५॥। उवं वादि नीदे वै श।। स वं लो के कं कार
ण।। गीरं नुन य जा ली न्या।। म यो लं र द्व बदन।। ६॥। टी का।। अग
ये ब्रह्म मूर्ती व सीष्टा आ पण।। उक द्यु पव ज्ञे स्थीर स्थान।। ते थे
उपशाती विश्वा ती पा को न।। वा नाय मान आ हेस की।। ७॥। कल्या
ए क मी त पुर मती।। आ नं द नि न र हो उन विती।। स वर्ण पी अनु सं
धान रती।। तु श्या बुद्धी वृत्ती सूजा है की।। ८॥। तु ज्ञे त प नि विद्व
हो उन।। कल्या श्वा त अनु वर्तन।। पा वा व या योग व स्तु परी पूण।।
प्राप्ती तु लं कारण जा ली की।। ९॥। स क कृ मय उपशांती जा ली।।

(१०A)



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com